INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कत्थक नृत्य में नवीन प्रयोगः विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ. भावना ग्रोवर
विभागाध्यक्ष, असिस्टेंट प्रोफेसर (कथक नृत्य), परफारमिंग आर्ट विभाग
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ(उ. प्र.)

भारतीय शास्त्रीय नृत्य कथक की आरंभ से ही एक विशाल व समृद्ध परम्परा रही है। प्रारंभ से ही समय परिवर्तन के साथ–साथ कथक नृत्य में नवीन प्रयोग होते रहे और नृत्य परिवर्तित भी होता गया। सोलहवीं शताब्दी जिसे हम रीति–काल के नाम से पहचानते है उस समय तक कथक नृत्य पर राम व कृष्ण भक्ति का प्रभाव था तथा राम व कृष्ण लीलाओं ही कत्थक नृत्य का मुख्य आधार थी। सत्रहवीं व अठारहवीं शताब्दी में जब कथक नर्तको को नवाबो व राज्यों का संरक्षण प्राप्त हुआ और कथक नृत्य में नये प्रयोग हुए फलतः अनेक परिवर्तन आये। हिन्दु राजाओं के यहाँ कथक नृत्य का सात्विक रूप रहा और मुस्लिम नवाबों जो स्वभावतः श्रृंगारप्रिय व विलासिता पूर्ण थे, यहाँ पर कथक का स्वरुप श्रृंगारिक बना। शैली व वंशावली के आधार पर उन्नीसवी सदी में कथक नृत्य की तीन शैलियाँ, घरानों के रूप में विकसित हुई जो जयपुर घराना, लखनऊ घराना व बनारस घराना के रूप में जाने जाते है। एक अन्य अप्रचलित घराना, रायगढ़ घराना जो रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह के संरक्षण में विकसित हुआ। प्रत्येक घराने की भिन्न–भिन्न शैली उस क्षेत्र व राजाओं के स्वभाव के अनुसार प्रतिष्ठित हुई। उस समय तक प्रत्येक घराने में कथक की प्रस्तुति परम्परागत रूप से की जाती थी और पौराणिक कथाओं पर आधारित नृत्य नवीन प्रयोग के रूप में किये जाते थे। धरानों के विकसित होने पर मुख्य परिवर्तन कथक के नृत्त पक्ष में आ गये। उस समय कथक के नवीन प्रयोग विकसित हुए जैसे– प्रणाम के टुकडे के स्थान पर सलामी, आमद व अभिनय में ठुमरी, दादरा आदि का प्रचलन हुआ।

''स्वतन्त्रता के पश्चात बौद्धिक क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय साहित्य और कला का नवीन रूप से मूल्यांकन होना लगा।''[1] स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कथक नृत्य में नवीन प्रयोग प्रारंभ हुए तथा समय परिवर्तन के साथ–साथ नृत्य में भी परिवर्तन आये। ''कथक में सौदर्य, पवित्रता, गहनता, सर्वव्यापकता, जनसाधारण को लुभाने वाली आकर्षकता एवं सृजनशीलता के गुण समाहित है।''पर यही कारण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से लेकर वर्तमान तक कथक नृत्य में सैकडों नवीन प्रयोग हुए। कभी तो वह विद्वानों व दर्शकों की कसौटी पर खरे उतरे है तो कभी नहीं भी। मेरे विचार से इसका कारण यह रहा कि जो प्रयोग शास्त्रीय नियमों में बँधकर किये गये अर्थात् कथक का मूल स्वरूप, उसका सौंदर्य तत्व जिन प्रयोगों में नष्ट नही हुआ, उन प्रयोगो को सराहना मिली व वह प्रयोग प्रतिष्ठित हुए तथा जिन प्रयोगो ने कथक के मूल स्वरूप को ही नष्ट कर दिया ऐसे नवीन प्रयोग कथक के लिए सर्वथा हानिकारक सिद्ध हुए है।

बीसवीं शताब्दी में जब कथक महफिलों से निकलकर मंच पर आया तब इसके प्रस्तुतिकरण में नवीन प्रयोग होने आरंभ हुए क्योंकि समय के साथ परिवर्तन व नवीनता आवश्यक है। डॉ0 माया टाक लिखती है कि ''पिछले कई वर्षो से कथक के परम्परागत घरानेदार और सृजनशील नृत्यकारों ने रूढ़िगत परम्परा से हटकर सार्थक प्रयास किये है। वर्तमान समय में नृत्याचार्यों की मान्यता है कि समयानुसार कुछ परिवर्तन आने ही चाहिए जिससे नई पीढी उनको पसंद करें और यह नृत्यशैली अधिक लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त करे'' इसी संदर्भ में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना कुमुदिनी लाखिया जी का विचार है कि ''परम्परागत कथक नृत्य में परिवर्तन होना चाहिए। कला ऐसी होनी चाहिए जिसे जन साधारण समझ सके।''[4] यही कारण है कि वर्तमान में नृत्य के साथ–साथ इसके प्रस्तुतिकरण, वेशभूषा, रूपसज्जा, अलंकरण व रंगमंच की प्रकाश व्यवस्था में भी नित नये प्रयोग हुए है जिससे कथक नृत्य आज तक भी जन साधारण के ह्रदय में बैठा हुआ है।

कथक नृत्य के अन्तर्गत नवीन प्रयोगः– कथक के नृत्त पक्ष में प्रचलित व अप्रचलित तालों का नृत्यांकन तो पूर्व में ही प्रचलन में था परन्तु वर्तमान में नवीन प्रयोगों में साढ़े व सवाई मात्राओं की ताल रचना कर नाचा जाने लगा है जैसे साढ़े छः. साढ़े सात, साढ़े नौ, साढ़े ग्यारह मात्रा आदि। यद्यपि नवीन प्रयोगों के दौरान विद्वानों द्वारा इन्हे तालों के नाम दे दिये गये हों, परन्तु मात्रा का नृत्यांकन होता है साढ़े मात्रा में टुकड़ा तोड़ा ,परन आदि बंदिश का सम पर आना रोंमाचित कर देता है अन्य प्रचलित तालों की भाति ही इन मात्राओं में थाट, आमद, उठान, तोड़े, टुकडे परन आदि सभी का नृत्यांकन किया जाता है। कथक नृत्य में जो स्थान अभिनय पक्ष का है वही ताल पक्ष का भी है अतः साढे मात्राओं का नृत्यांकन दर्शकों द्वारा सराहा गया है। कथक नृत्य के नृत्त पक्ष के अन्तर्गत वर्तमान में गिनती की तिहाईयों का भी प्रयोग होता है जिसका सूत्रपात कथक के विष्वविख्यात कलाकार पं0 बिरजू महाराज ने किया है। तिहाईयाँ व बोल–बनाव ने कथक को जनसाधारण के लिए

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अत्यधिक सुलभ व मनोरंजक बना दिया है। त्रिताल के अन्तर्गत पाँच, सात, आठ, नौ मात्रादि का तिहाईयाँ पं0 जी की ही उपज है। वर्तमान में शायद प्रत्येक युवा कथक नर्तक कथक के इस वर्तमान प्रयोग को अपनी प्रस्तुति में विभिन्न प्रकार से करता है। पं0 बिरजू महाराज जी ने इन तिहाईयों को आम जीवन से भी जोड़ा है अर्थात् गिनती की तिहाइयों को ताल में पिरोकर अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जैसे– हॉकी खेलना, टेलीफोन तिहाई, आयु के तीन पडाव यथा बचपन, जवानी व बुढ़ापा, गाय, हिरन व शेर की तिहाई, चिडिया व उनके बच्चों की तिहाई आदि। इसी प्रकार का एक प्रयोग प0 जी ने कालका बिन्दादीन कथक महोत्सव सन् 1983 में किया। ‘‘ ‘नृत्य केलि’ जो कि एक प्रभावशाली नृत्य रचना थी के अन्तर्गत नृत्य में कबड्डी, खो–खो और चौपड जैसे खेलो के प्रदर्शित किया गया। निःसंदेह यह एक नवीन व बेजोड रचना रही’’ यह प्रयोग शास्त्रीय नियमों में बँधे हुए प्रयोग है अर्थात् स्वरूप तो तिहाई खेल का है अर्थात बोल बनाव व गिनती पर एक छोटा सा किया अभिनय। जिन साधारण श्रोताओं के लिए नृत्य के क्लिष्ट बोल समझना मुश्किल था वही श्रोता इन प्रयोगों में कथक का पूर्व आनंद ले पाते है।

कथक नृत्य–नाटिका अर्थात बैले, भी इस नृत्य शैली के अभिनय पक्ष के अन्तर्गत किये गये नवीन प्रयोग हैं। जब किसी कथा को नृत्य के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत किया जाये, नृत्य–नाटिका कहलाता है। ‘‘आज जिसे हम नृत्य–नाटिका के नाम से जानते है उसका विकास इसी शताब्दी में पाश्चात्य देशों के बैले के अनुकरण पर हुआ है और इसी कारण बहुसंख्यक लोग इन भारतीय नृत्य नाटिकाओं के बैले कहकर पुकारते है यद्यपि बैले, और नृत्य–नाटिका में संरचनागत बहुत अन्तर है।’’[6] आरंभ में नृत्य नाटिकाएं रामायण, श्रीमदभागवत, महाभारत आदि पुराणों से कथा लेकर उसे संगीत बद्ध कर नृत्य किया जाता था। किन्तु शनैःशनैः दर्शकों की रूचिनुसार कथक नृत्य में नवीन संरचना के प्रयोग हुए और नृत्य–नाटिकाओं में हमारे भौतिक जीवन में चल रही घटनाओं पर आधारित नृत्य नाटिकाओं की संरचना होने लगी जैसेः पं0 बिरजू महाराज ने मालती–माधव, शान ए अवध, रूपमति बाज बहादुर, हब्बा खातून, नायिका आदि अनेक नृत्य संरचनाए नृत्य नाटिका के रूप में की है। सुप्रसिद्ध कथक नर्तक पं0 राजेन्द्र गंगानी ने भी ‘झलक’ नृत्य–नाटिका की संरचना की। जिसमें राजस्थान के आम–जनजीवन की झलक है। ‘प्रकृति’ की संरचना प्रदूषण विषय पर की। इसी प्रकार कथक नृत्य के अनेक विद्वान कलाकारों ने समय–समय पर कथक में नवीन प्रयोग कर कथक को दर्शकों से जोड रखा है।

वर्तमान में कथक में भारतीय शास्त्रीय व लोक संगीत की गायन शैलियों पर भी अभिनय नवीन प्रयोग हुआ है। कथक नृत्य में पूर्व तक ठुमरी, दादरा आदि पर अभिनय प्रस्तुत किया जाता था किन्तु अभिनय पक्ष में नवीनता लाने के लिए अनेक गायन शैलियों को प्रबंधो पर अभिनय कर कथक में नवीन प्रयोग किये गये। जैसे– राजस्थानी मांड, गीत, छोटा ख्याल, ध्रुपद धमार, चतुरंग, ब्रज की होरी, तराना और वर्तमान में गजल को भी नृत्य के साथ जोड़ा गया है। जिसका मुख्य श्रेय सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना पंडिता उमा शर्मा जी को जाता है उनका विचार है कि कथक है भावों का नृत्य, गजलों की भाव प्रवणता ही मन को झकझोरती है। दोनों का मेल दोनों के लिए सोने पे सुहागा साबित हुआ है’’[7] वर्तमान में आधुनिक फिल्मी गीतों में भी कथक नृत्य किया जाने लगा है।

कथक के नवीन प्रयोगो में एक शब्द कन्टेमपरेरी नृत्य भी सुनने को मिलता है। सुप्रंसिद्ध कथक नृत्यांगना आदिति मंगलदास ने इसको कथक के साथ जोड़ा है तथा कथक का यह एक ओर प्रयोग दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया। यह नवीन प्रयोग कभी तो सराहा गया तथा कभी नही भी। क्योंकि कथक का शास्त्रीय स्वरूप इसके द्वारा भंग हुआ है। परन्तु कन्टेमपरेरी कथक में अनेक नवीन प्रयोग किये जा रहे है तथा नयापन होने के कारण प्रचलन में भी है।

वर्तमान में हो रहे नवीन प्रयोगों मे सूफी कथक, योग कथक व कथक नृत्य के उपचार के रूप में भी नवीन प्रयोग किये जा रहे है। यद्यपि यह एक सौदर्यात्मक दृश्य व श्रृव्य कला है किन्तु प्रत्येक विद्या में समयानुरूप परिवर्तन व नयापन लाना आवश्यक है तभी कथक नृत्य द्वारा नई पीढी के अन्तर्गत सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखा जा सकता है।

एक अन्य नवीन प्रयोग कथक नृत्य संगीत में भी किया गया है। यह तो सर्वज्ञात है कि कथक नृत्य का संगीत व संगीत वाद्य पूर्ण रूप से भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित है, कथक नृत्य में ताल का भी उतना ही महत्व है जितना अभिनय का है किन्तु वर्तमान में पाश्चात्य संगीत के ताल वाद्यो पर भी कथक नृत्य प्रस्तुत किया जा रहा है जिसे फयूज़न कहा जाता है।

इसी प्रकार अनेक नवीन प्रयोग कथक नृत्य में किये गये है अथवा किये जा रहे है किन्तु मुख्य बात यह कि जो नवीन प्रयोग शास्त्रीय नियमों में बंधकर किये गये है वह तो कथक नृत्य के स्वरूप को बचाये हुए है अन्यथा अनेक प्रयोग ऐसे भी है जिसमें केवल कथक नाम मात्र रह गया है और मात्र मनोरंजन हेतु इसे देखा जा रहा है परन्तु सभी कथक विद्वानों का यह

कर्तव्य बनता है कि हम नवीन प्रयोग यह ध्यान रखकर करें कि इस सौंदर्यात्मक शास्त्रीय नृत्य शैली का स्वरूप न बिगढ़े। भारतीय शास्त्रीय नृत्य हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जिसे बचाना व संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है तथा नवीन प्रयोग यदि शास्त्रीय नियमों में बंधकर किये जाये तो इससे नृत्य का स्वरूप भी नहीं बिगड़ेगा तथा नयापन भी होगा और नयापन होने पर ही हमारी आने वाली पीढियाँ इसे रूचिनुसार सीखेगी और संरक्षित रख पायेगी।,

सन्दर्भ –

1 आजाद, पं0 तीरथराम, कथक ज्ञानेश्वरी पृष्ठः 535
2 राक, डॉ0 माया, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य पृष्ठ–17
3 वही0 पृष्ठ–125
4 वही0 पृष्ठ–125
5 वही0 पृष्ठ–125
6 दाधीच, डॉ0 पुरू कथक नृत्य शिक्षा, भाग–2 पृष्ठ 69
7 टाक, डॉ0 माया, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, पृष्ठ–125